P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-10* June- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय शैक्षिक पुनर्जागरण में राजाराम मोहनराय का योगदान एवं वर्तमान में उपादेयता

दिनेश प्रताप सिंह
प्रवक्ता,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
आई0 एम0 आर0,
गाजियाबाद

सारांश

पृष्ठभूमि प्राचीन काल से ही भारत एक महान राष्ट्र रहा है। भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, ज्ञान–विज्ञान तथा रीति–रिवाज विश्व में सर्वश्रेष्ठ रही है। अपने गौरवमय अतीत के लिए आज भी भारत जगत–विख्यात है। प्राचीन कालीन भारत की बहुमुखी उन्नति और विकास का श्रेय तत्कालीन भारतीय गुरूकुल शिक्षा प्रणाली को था। आश्रमों के पावन सुरम्य प्राकृतिक वातावरण में, गुरूकुलों में 25 वर्ष के ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए ज्ञानार्जन करने वाले ब्रह्मचारी भविष्य में समाज के सफल नागरिक होते थे, जिनके सद्कार्यों से राष्ट्र एवं समाज का उन्नयन होता था। भारत के ज्ञान–विज्ञान से प्रभावित होकर विदेशों के बहुत से विद्यार्थी एवं विद्वान ज्ञानार्जन हेतु यहाँ आया करते थे। शताब्दियों तक पल्लवित–पुष्पित होने वाली यह शिक्षारूपी बेलि, मध्य युग की अराजकता एवं बर्बरता सहन न कर सकी और कुम्हला गई, किन्तु इस बेलि के कुछ बीज यत्र–तत्र फैल गये, जो काशी, मुथरा, मिथिला, अयोध्या, हरिद्वार, चित्रकूट जैसी धार्मिक नगरियों में संस्कृत पाठशालाओं एवं गुरूकुलों के रूप में अंकुरित हुए, जिनमें प्राचीन शास्त्रों का अध्ययन–अध्यापन होता था। यह शिक्षण संस्थाएँ प्राचीन ज्ञान–विज्ञान एवं परम्पराओं को अपने में सँजोए पुनः स्वर्णिम युग की प्रतीक्षा कर रही थीं कि उसी समय में ब्रिटिश शासन का सूत्रपात हो गया। इस शासन ने भारत की परम्पराओं, सभ्यता, संस्कृति एवं कला–साहित्य पर तुषारापात कर, पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति के प्रचार और प्रस्थापन का प्रयास किया तथा उन्हें सफलता भी मिली। पाश्चात्य सम्पर्क ने भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्र में एक अपूर्व हलचल उत्पन्न कर दी थी। भारत के अँग्रेज़ों ने दुहरी चाल चली, एक ओर तो वे भारतवासियों को असभ्य, दास और अन्धविश्वासी कहते रहे तो दूसरी ओरवे उन गतिविधियों और संस्थाओं का विरोध करते रहे, जो प्रगतिशील थीं तथा भारतीयों में राजनीतिक एवं सामाजिक जागरण के लिए प्रयासरत थीं। भारतीय समाज उस समय राजनीतिक एवं सामाजिक जागरण के लिए प्रयासरत था।

मुख्य शब्द : पुनर्जागरण, पाश्चात्य, संस्कृति, नवाभ्युत्थान।

प्रस्तावना

भारतीय समाज उस समय छुआछूत, जातिवाद, ऊँच–नीच, बाल–विवाह, सती–प्रथा जैसी संकुचित भावनाओं से ग्रसित था। पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति ने हमारी समस्त प्राचीन परम्पराओं, धारणाओं, विश्वासों और विचारों को चुनौती दी। फलस्वरूप हम उन पर नये सिरे से विचार करने के लिए विवश हुए और पाश्चात्य चुनौती का उत्तर देना अनिवार्य हो गया,परन्तु भारतीयों का एक वर्ग पाश्चात्य संस्कृति से इतना प्रभावित हो गया कि वह पाश्चात्य विचारों एवं रीतियों की नकल विवेक शून्य होकर करने लगा। इस वर्ग के नवयुवक पश्चिम का सब कुछ अच्छा समझते थे और भारतीय संस्कृति का सब कुछ बुरा। वे भारत भूमि पर नवीन यूरोप बसाने का प्रयास करते थे, परन्तु इस प्रक्रिया पर भारतीय नवाभ्युत्थान और पुनर्जागरण ने कुछ सीमा तक अंकुश लगा दिया। भारत में पुनर्जागरण का आन्दोलन यहाँ के जनजीवन के प्रत्येक क्षेत्र में होने वाला एक ऐसा सुविस्तृत आन्दोलन था, जिसमें एक उदात्त राष्ट्रीय भावना एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्रसारित हो गयी। भारतीय पुनर्जागरण प्रारम्भ में केवल एक बौद्धिक नवाभ्युत्थान आन्दोलन के रूप में प्रकट हुआ था। परन्तु शीघ्र ही वह एक ऐसी नैतिक शक्ति के रूप में परिवर्तित हो गया, जिसने आगे चलकर यहाँ की सामान्य विचारधारा से लेकर साहित्य, दर्शन, शिक्षा एवं कला तक को प्रभावित किया। आंग्ल शासकों के शारीरिक एवं बौद्धिक दमन के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए राष्ट्र प्रेम की भावना ने राष्ट्र प्रेम के जनमानस में

जिस पुनर्जागरण का संचार किया, उसकी एक धारा शैक्षिक पुनर्जागरण थी। शैक्षिक पुनर्जागरण के माध्यम से पतनोन्मुख शिक्षा में सुधार, भारतीय तथापाश्चात्य शिक्षा समन्वय लाने हेतु तथा अपने धर्म एवं संस्कृति की सुरक्षा हेतु जिन महापुरूषों ने प्रयास किया, उनमें श्री राजा राममोहन राय भी थे।राजा राममोहन राय का जन्म बंगाल के हुगली जिले के राधानगर ग्राम में हुआ था। उनके पितामह कृष्णचन्द्र बनर्जी बंगाल के नवाब की सेना में थे, और उन्हें 'राय' की उपाधि प्राप्त हुई थी। तब से 'राय' शब्द परिवार के सभी सदस्यों के नाम के साथ जुड़ गया था। राममोहन राय के पिता श्री रमाकान्त राय थे तथा माता का नाम तारपी देवी था। राममोहन राय बाल्यकाल से ही प्रतिभा के धनी थे। वह बहुभाषाविद् थे। कम से कम छः भाषाओं में उन्होंने सहजता एवं दक्षता के साथ अपने भावों को अभिव्यक्त कर सकने की क्षमता प्राप्त की थी। भारत में जब हिन्दू धर्म अपने अंधविश्वासों के कारण पराभाव को प्राप्त कर रहा था तथा युवक वर्ग पर ईसाईयत का प्रभाव अपनाकर इस प्रगतिशील युग में भारत के खोये हुए प्रभुत्व को पुनः प्राप्त करना अपना लक्ष्य रखा। राजाराम मोहन राय भारत में आधुनिकता के प्रवर्तकों में प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने न केवल सृजनात्मक सुधार का झंडा गाड़ा, बल्कि भारतीय चिंतन में आधुनिक प्रवृत्ति और प्रभाव को गुणात्मक स्तर प्रदान किया। डॉ0 पट्टाभीसीतारमैया के मत में राजाराम मोहनराय भारतीय राष्ट्र के देवदूत और आधुनिक भारत के जनक थे। हम उनके जीवन–दर्शन में मूर्ति पूजा का खंडन, बहुदेवत्ववाद के स्थान पर एकेश्वरवाद की प्रशंसा तथा विश्वधर्म का प्रतिपादन पाते हैं। हिन्दू धर्म में व्याप्त कुरीतियों के वे घोर विरोधी थे, किन्तु ईसाई धर्म द्वारा हिन्दू धर्म पर किये गये आक्रमण के समय उन्होंने वेद और शास्त्रों के आधार पर हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध की। आध्यात्मिक उन्नति के लिए निर्मित ब्रह्मसमाज ने अतीत और अर्वाचीन के बीच खाई को पाटना प्रारम्भ किया। ब्रह्म समाज की प्रकृति प्रधानतः धर्म निरपेक्ष थी। विश्ववाद के आधारभूत सिद्धान्त से इसका गहरा सम्बन्ध था। आरम्भ में ब्रह्म–समाज केवल एक धार्मिक संगठन था और उसे 'सार्वजनिक गिरजाघर' की संज्ञा दी गई थी। वह 'आत्मिक सभा' का परिवर्तित रूप था, जिसकी स्थापना धार्मिक सत्यों की खोज के लिये की गई थी। कालांतर में, इसने धार्मिक की अपेक्षा सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षिक आन्दोलन का रूप ले लिया। ब्रह्म समाज प्रथम देशी आन्दोलन था, जिसने देश की शिक्षा प्रणाली में रूचि दिखलाई। इस आन्दोलन की उत्पत्ति के पूर्व अँग्रेज़ शासक अपने अधीन भारतभूमि पर संचालित शैक्षिक नीति का निर्धारण स्वयं करते थे। इस विषय पर भारतीय दृष्टिकोण का 'प्रथम अभिसूचक' होने के नाते ब्रह्म समाज आन्दोलन महत्वपूर्ण था। जिस समय ब्रह्म समाज आन्दोलन ने अपना शैक्षिक कार्य आरम्भ किया, देश की शिक्षा की स्थिति अस्पष्ट और अव्यवस्थित थी। शिक्षा के क्षेत्र में एकरूपता, समन्वय और केन्द्रीय नियंत्रण नाम–मात्र का भी नहीं था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की नीति ने शिक्षा के क्षेत्र मे ंकोई स्पष्ट रूप ग्रहण नही ं किया था। दो प्रकार की संस्थाएँ–देशी संस्थाएँ और मिशनरियों द्वारा संचालित संस्थाएँ–मनमानेके राजनीतिक पुनर्जागरण की पृष्ठभूमि बनाने एवं भारत के स्वतंत्रता–आन्दोलन के बीज बोने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। ब्रह्म समाज आन्दोलन एक प्रकार से सरकारी शिक्षा प्रणाली के विरूद्ध प्रथम भारतीय प्रतिक्रिया थी। उसे देश की शिक्षा प्रणाली को भारतीय दृष्टिकोण से सुधारने का प्रथम संगठित प्रयास कहा जा सकता है। वर्तमान अध्ययन की आवश्यकता प्रस्तुत शोध–विषय पर अनुसंधान की आवश्यकता इसलिए पड़ी कि भारतीय समाज लम्बे समय से शैक्षणिक सुधार की आवश्यकता की अनुभूति कर रहा है, परन्तु – ''शैक्षिक परिवर्तन'' राजनीतिज्ञों, तथाकथित अभिजात्य वर्ग, क्रान्तिप्रेमी नेताओं की पसन्दगी का नारा बनकर रह गया है। इस देश का दुर्भाग्य है कि इस प्रकार के अध्ययन की नितान्त आवश्यकता, सड़क छाप नारों, चुनावी भाषणों द्वारा ड्राइंग रूम की चर्चाओं में खो गयी है। शैक्षणिक स्तर पर शिक्षा–पद्धति के जिस रूप में एक लम्बे समय से स्थिरता आ गयी है, वह देश की युवा पीढी को आधार बनाया जाय। ब्रह्म समाज एवं राजाराम मोहन राय ने इन्हीं शैक्षिक सिद्धान्तों के आधार पर विभिन्न विद्यालयों की स्थापना की थी। राजाराम मोहन राय ने अपनी शिक्षा में विज्ञान एवं अध्यात्म दोनों की शिक्षा पर बल दिया है। अतः यदि ब्रह्म समाज एवं राजा राममोहन राय के शिक्षा दर्शन के आधार पर आधुनिक शिक्षा का निर्माण किया जाय तो निश्चित ही प्राचीनतम भारतीय ज्ञान–विज्ञान एवं भारतीय संस्कृति का आदर्श रूप एक बार पुनः जीवन्त हो उठेगा तथा क्लांत एवं विचलित होते हुए विश्व को एक बार पुनः शीतल प्रश्रय प्रदान कर सकेगा।

वर्तमान अध्ययन का प्रयोजन व उददे्श्यः

1. राजाराम मोहनराय के दार्शनिक विचारों का अध्ययन
2. राजाराम मोहनराय के श ैक्षिक विचारों का अध्ययन
3. राजाराम मा ेहनराय के द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज के उद्देश्य, नियम एवं कार्य–प्रणाली का अध्ययन
4. राजाराम मोहन राय द्वारा स्थापित विद्यालयों का अध्ययन करना
5. राजाराम मा ेहनराय के अन्य धार्मिक कार्य, जैसे–नारी शिक्षा, जनशिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, चिकित्सा–शिक्षा, धार्मिक शिक्षा आदि का अध्ययन करना
6. वर्तमान भारतीय शिक्षा में राजाराम मोहनराय के श ैक्षिक विचारा ें की प्रासंगिकता तथा उपादेयता का अध्ययन करना

साहित्यावलोकन

Mukhopandhyay, G.C., "The 15th Century Renaissance in Bengal and its Influence on India Educatin" Ph.D. Art, Calcutta University, 1983. The Study focused attention on the 19th Century renaissance in Bengal and its influence on Indian education. Some of main observation were :- 1- The 19th Century was a crucial period in Indian History. It marked the transition of India society from medievalism to modernism. In this perod the renaissance began in Bengal and spread all over the country.

The renaissance movement resulted in an increase in the number of primary schools and the establishment of institutions like the Hindu College,

followed by a large Number of institutions both in and outside Calcutta-such as the Calcutta School Book Society. 3- During the century, three Universities were established in Calcutta, Bombay and Madras. Along with general education a begning was made in opening institutions for technical, legal and agricultural education. 4- The Renaissance that started in Bengal influenced similar movements in Bihar, U.P., Assam, Bombay, Madras, Punjab and other Terriotories. Thus the new education brought into Bengal, Through the renaissance spread far and wide and influenced renaissance movements in other regions also. (B) Awasthi, K.K. - "A Critical Appraisal of Indienous Efforts for Development of Education during the period 1834 to 1947," Ph.D. Education, Avadh University, 1985. The study aimed at a critical evaluaton of the indigenous efforts for the spread of education during the period 1834 to 1947. The author observed :- 1. In ancient times education was imparted in the Gurkuls which were managed by individuall teachers. During the Muslim period, education was imparted in Maktabs and Madrasas. When the Europeans came to India, Christian missionaries accompanion then and they laid the Foundation of a modern system of education in India. 2. Indian religious reforms like Swarmi Vivekanand, Raja Ram Mohan Roy, Swami Dayananda and Anni Besant also played an important role in giving shape to the Indian system of education. 3. During the freedom movement, attention was paid to reforms in education. The sargent scheme was formulatad for the reconstruction of the educational system after the Second World War. (C) Ayyar,C.,"The New Education and Intellectal Purcuits in Bengal from 1817 to 1857", Ph.D.Hist. Jad U.1984. The work aimed to discussing the spread of the New Education in Bengal during the 40 years between the Foundation of Hindu college in 1817 to the establishment of Calcutta University in 1857 and the intelectual pursuits that emerged largely in response to it. The researcher obseved - That the new education brought about a profound changa in outlook on life and society in Bengal, but. Unfortunately, this remained confined to a small section of the people, and failed to produce any economic and social transformation. Its benefits were reaped by a handful of people who came to from the new elilte separated from masses by their learning, wealth and social influence.

निष्कर्ष एवं मूल्यांकन

प्रख्यात समाज–सुधारक, अनेक भाषाओं के प्रकाण्ड पण्डित, अध्यात्म–दर्शन एवं धर्म के क्षेत्र में विशिष्ट ख्याति प्राप्त, भारतवर्ष की गौरव–गरिमा के प्रतीक पुरूष राष्ट्रनायक राजा राममोहन राय राजा राममोहन राय के व्यक्तित्व एवं कृतित्व, शिक्षा–दर्शन, जीवन–दर्शन, पुनर्जागरण सम्बन्धी महत्वपूर्ण अवदान एवं भारतीय शैक्षिक जगत में उनकी प्रासंगिकता एवं उपादेयता के सम्बन्ध में निष्कर्ष एवं मूल्यांकन निम्नांकित है :–

1. राजा राममोहन राय का जन्म 22 मई, सन् 1772 में पश्चिम बंगाल प्रान्त के बर्दमान जिले के राधानगर गाँव में हुआ था और उनकी माता का नाम तारिणी देवी एवं पिता का नाम रमाकान्त था। धर्मावलम्बी श्रीमती तारिणी देवी का विवाह वैष्णव धर्मावलम्बी श्री रमाकान्त जी से हुआ था।
2. किशोरावस्था से युवावस्था की ओर अग्रसर राजा राममोहन राय ने अपने पिता से अनेक सामाजिक एवं धार्मिक मुद्दों पर वाद–विवाद के सम्बन्ध में कहा था–''इन विवादों में मैंने ब्राह्मणवाद का नहीं, बल्कि केवल उसमें पैदा हुई विकृतियों का विरोध किया था।
3. प्रारम्भिक शिक्षा के उपरान्त राममोहन राय ने अरबी, फ़ारसी, बाँगला, संस्कृत एवं अँग्रेज़ी–जर्मन की विशिष्ट शिक्षा प्राप्त की थी, जिसने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को बहुआयामी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाईथी और वे आधुनिक भारत के निर्माता राष्ट्रनायकों में प्रथम पंक्ति के प्रथम भारतीय महापुरूष थे।
4. राममोहन अपने समाज सुधार आन्दोलन की सफलता के कारण ही आधुनिक भारत के जनक कहे जाते है ं। उन्होंने भारतीय समाज की अंतःपीड़ा को महसूस किया। उन्होंने भारतीय समाज को बदलने के लिए अकेले ही संघर्ष का बिगुल बजाया। उस समय को व्यतीत हुए दो सौ वर्षों से भी अधिक हो गए है ं। फिर भी देश की जटिल समस्याएँ आज मुँह बाए खड़ी हैं। स्त्रियों को दहेज की आग में झा ेका जा रहा है। समाज अशिक्षा, गरीबी और बेरोजगारी से बेहाल है। लोग बेरा ेजगारी से तंग आकर आत्महत्या कर रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में राममोहन के विचार उतने ही उपया ेगी एवं सक्षम है ं, जितने कि उनके विचार उनके जीवनकाल में उपयोगी एवं सक्षम थे।
5. राममोहन ने वेद का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करके भारत को गौरवान्वित किया। उन्होंने लोगों को जाग्रत करने में जो अथक प्रयास किया, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम होगी। आज राजा राममोहन राय हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनके जीवन की यादें हमारे दिलोदिमाग में बसी हुई हैं। समाज में फैली बुराइयों को दूर करने वाले उस महापुरूष के प्रति हम अपनी अगाध श्रद्धा प्रकट करते है ं। उनके द्वारा किए गए मानव–समाज–कल्याण के कार्यों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। वे हमारे दिल में आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में हमेशा अमर रहेंगे।
6. स्थापनाएँ एवं मान्यताएँ 1. समाज सुधार के लिए राममोहन ने जो आन्दोलन छेड़ा, उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण और सफल आन्दोलन, जो राममोहन के नाम के साथ सदा जुड़ा रहेगा, वह था ''सती प्रथा'' के विरूद्ध राममोहन का संघर्ष। इसके अलावा राममोहन ने बहुविवाह, बालविवाह, जात–पात, अस्पृश्यता और स्त्रियों का सम्पत्ति पर अधिकार, जैसे कई एक सामाजिक अन्यायों के विरूद्ध आन्दोलन किया।
7. राममोहन के सतीप्रथा के विरूद्ध छेड़े गए आन्दोलन के पीछे उनकी हिन्दू नारी की तत्कालीन अवस्था के प्रति गहरी सहानुभूति थी। उन दिनों हिन्दू नारी पिता या पति किसी की भी सम्पत्ति की अधिकारिणी नहीं होती थी। इसी से राममोहन ने बहुविवाह के विरूद्ध

भी अपनी कलम उठाई थी। 3. हिन्दू धर्म शास्त्रों के अलावा इस्लाम का प्रभाव, तन्त्र साधना या तन्त्र शास्त्र का अध्ययन, ईसाई पादरियों के साथ निकट सम्बन्ध और पश्चिमी ज्ञान–विज्ञान के संस्पर्श में आने के कारण राममोहन के जाति–व्यवस्था या जात–पाँत सम्बन्धी विचारों में परिवर्तन आना स्वाभाविक था। इसीलिए शायद उन्होंने 'वज्रसूची' जैसे जात–पाँत विरोधी संस्कृत ग्रन्थ का अनुवाद करके छपवाकर बँटवाने का बीड़ा उठाया।

8. आर्थिक–क्षेत्र में राममोहन ने जिन पहलुओं पर मुख्य रूप से आन्दोलन चलाया, उनमें किसानों की आर्थिक स्थिति, राजस्व–समस्या, ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यावसायिक एकाधिकार का विरोध, फ्री ट्रेड या स्वतन्त्र व्यापार की पैरवी, और अन्त में शिक्षित, धनी और चरित्रवान यूरोपीय नागरिकों के भारत में बसने का अधिकार देकर देश की आर्थिक उन्नति में सहयोग देना मुख्य है।
9. आर्थिक क्षेत्र में राममोहन का दूसरा प्रमुख आन्दोलन ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापारिक एकाधिकार के विरूद्ध था। इनमें नमक के व्यापार में कम्पनी के एकाधिकार के विरूद्ध आन्दा`लन में राममोहन ने जोर–शोर से भाग लिया था। इसमें भी वे गरीब मजदूरों के हितों की रक्षा के लिए आगे आए राजा राममोहन राय के भागीरथ प्रयास से एशियाटिक सोसाइटी, फोर्ट विलियम कालेज आ`र श्रीरामपुर का बेप्टिस्ट मिशन, तीनों ने, शताब्दी पुराने लुप्तप्राय शास्त्र, धर्म, न्याय, भाषा और साहित्य की पुस्तकों का उद्धार करके, सम्पादित और अँग्रेज़ी के अलावा यूरोप की और भाषाओं में अनुवाद करके भारतीय संस्कृति को एक बार फिर से जागृत कर दिया।
10. राममोहन ने सबसे पहले वेदान्त सूत्र, वेदान्त सार, कठोपनिषद्, केनोपनिषद्, मुण्डकोपनिषद् आदि का बांग्ला और अँग्रेज़ी में अनुवाद किया। पौराणिक कहानियों और धार्मिक पाखण्डों को ही धर्म मान लेने की गलती और धार्मिक संकीर्णता के दलदल में फँसे हिन्दू धर्म को पुनर्जीवित करने का बीड़ा राममोहन ने उठाया।
11. स्त्रियों की दशा सुधारने की दृष्टि से उन्होंने प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर उनके पति की सम्पत्ति में उत्तराधिकार के नियम का समर्थन किया। इस दृष्टि से उन्होंने सन् 1822 में 'उत्तराधिकार के विद्यमान हिन्दू नियम के अनुसार नारी के प्राचीन अधिकारों पर आधुनिक अतिक्रमण' नामक एक निबन्ध लिखा और उसमें याज्ञवल्क्य, नारद, कात्यायन, विष्णु, वृहस्पति, व्यास एवं कौटिल्स आदि विद्वानों द्वारा रचित ग्रन्थों का हवाला देते हुए यह सिद्ध किया कि प्राचीन भारत के विधि–शास्त्रों तथा धर्मशास्त्रों में स्त्रियों को भी पति की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी माना गया है।
12. राजा राममोहन राय अन्तरा`ष्ट्रवाद के अनन्य समर्थक और मानवतावाद के महान आराधक थे। भारतीय संस्कृति के एक प्रमुख आधार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' में उनकी पूर्ण आस्था थी।
13. राजा राममोहन राय शिक्षार्थियों को भी स्थान, जाति एवं धर्म किसी भी प्रकार की संकीर्णता से मुक्त देखना चाहते थे और साथ ही उन्हें देशी–विदेशी किसी भी प्रकार के ज्ञान को प्राप्त करने के जिज्ञासु के रूपमें देखना चाहते थे। इनके द्वारा स्थापित विद्यालयों में सभी छात्रों को समान दृष्टि से देखा जाता था और उनके साथ समान रूप से व्यवहार किया जाता था और सभी छात्र अपने का` जाति व धर्म की सीमाओं से ऊपर उठकर विद्यालय का छात्र मानते थे।
14. राजा राममोहन राय उन व्यक्तियों में से एक हैं, जिन्होंने इस देश में रूढि.वादी शिक्षा के स्थान पर प्रगतिशील शिक्षा के विकास का बिगुल बजाया और उसके विकास में एक बड़ा योगदान दिया।
15. डॉ0 पट्टाभीसीतारमैया के मत में राम मोहन राय भारतीय राष्ट्रवाद के देवदूत और आधुनिक भारत के जनक थे। वास्तव में राजा राम मा`हन राय आधुनिकता के प्रर्वतकों में प्रथम व्यक्ति थे। जिन्होंने न केवल सृजनात्मक सुधारवाद का झण्डा गाड़ा, बल्कि भारतीय चिन्तन में आधुनिक प्रवृत्ति और प्रभाव को गुणात्मक स्तर प्रदान किया।
16. विपिनचन्द्र पाल ने उन्हें बंगाल में आधुनिक अँग्रेज़ी शिक्षा का पिता कहा है। उनका विश्वास था कि बिना आधुनिक विज्ञानों का अध्ययन किए भारतवासी आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रों में यूरोपियन लोगों की तुलना नहीं करते। अतः अपने विचारों को व्यवहारिक रूप देने के लिए राम मोहन ने 1816 में कलकत्ता में इंग्लिश स्कूल व 1817 में अंग्रेज मित्रों की सहायता से कलकत्ता में ही 20 जनवरी, 1817 को हिन्दू कॉलेज की स्थापना की। राममोहन, महिला शिक्षा के भी उग्र समर्थक थे। यही कारण है कि पाश्चात्य वैयक्तिक स्वतंत्रता, समाचार पत्रों की स्वतंत्रता, राज्य का कल्याणकारी स्वरूप, शासन के प्रति उपयोगितावादी दृष्टिकोण आदि से सम्बन्धित उनके विचारों में ऐसे तत्व है, जिन्होंने भारत के राजनैतिक पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण कार्य किया है।
17. लूथर का कार्य ध्वसांत्मक विद्रा`हात्मक था, राममा`हन राय का कार्य 'पुनरुथानवादी' था। लूथर, वैयक्तिक व राजनैतिक क्षेत्र में निरकुंश राजतंत्र के समर्थक थे। राममोहन धार्मिक व दाश`निक क्षेत्र में स्वतंत्रता के पक्षधर थे।
18. श्रीमती इंदिरा गाँधी का यह उद्वबोधन स्वागत योग्य है कि 'मौलिक और मानवीय चिन्तन करने की आदत हम डालें, ताकि बुद्धि और करूणा का समन्वय हो सके, जिसके राममोहन राय जीवन्त उदारहण थे।'
19. उनकी मानवतावादी निष्ठा के कारण ही उनके मित्र तथा उपयोगितावाद के प्रवर्तक जर्मी बेंथम ने उन्हें मानव जाति की सेवा में समर्पित अपना प्रिय और घनिष्ठ सहयोगी घोषित किया था। महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी उन्हें 19वीं शताब्दी का अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का प्रथम भारतीय कहकर पुकारा था। राजा राममा`हन राय का सार्वभौम मानवतावादी, सहयोग, सद्भाव, सहिष्णुता और बंधुत्व में गहरा

विश्वास था तथा इसी आधार पर वे विश्व–समाज की रचना के समर्थक थे।

20. राजा राममोहन राय धार्मिक विश्ववाद या सार्वभौमवाद के ऐसे समर्थक थे जो मानव जाति को एक ऐसा परिवार मानते थे, जिसके विभिन्न राष्ट्र और उनमें निवास करने वाली विभिन्न जातियाँ एक सदस्य के रूप में शामिल थीं। वे शुद्ध रूप से भारतीय संस्कृति के उस सिद्धान्त के समर्थक थे जिसे ''वसुधैव कुटम्बकम्'' अर्थात् सारी पृथ्वी एक परिवार के समान है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *अरविन्द पोदार, राममोहन उतरपक्ष, कलकत्ता उच्चारण, 1982*
2. *क्षितिमोहन सेन, युगगुरू राममोहन कलकत्ता 1952*
3. *मणि बागची, राममोहन कलकत्ता जिज्ञासा 1958*
4. *ताराचन्द हिस्टी ऑफ फ्रीडम मूवमेन्ट इन इण्डिया वाल्यूम प्रथम एवं द्वितीय*
5. *एण्डूज सी0एफ0 इण्डियन रेनेसां*